AI के प्रयोग से हिंदी साहित्य में मौलिक भावनाओं पर प्रश्न चिह्न

विनय चंद्रकांत जंगम

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18143916

ABSTRACT:

आज दुनियाभर के हर क्षेत्र में या हर कार्य में AI देखा जा सकता है। ऐसा कोई काम नहीं जो यह नहीं कर सकता। इसे बस कमांड देना है कि मुझे यह चित्र बना दो, मुझे इस तरह से डिजाइन बना दो या फिर मेरे यह विचार है मुझे इन मुद्दों को ध्यान में रखते हुए कोई लेख बना दो। बस यह बताते ही काम हो गया। इसे बस बताना है यह उसे कर देगा। आज इसका प्रभाव समाज, शिक्षा, मीडिया पर तो था ही, लेकिन अब हिंदी साहित्य भी इसके प्रभाव से दूर नहीं रह सका। सवाल यह नहीं कि अब AI साहित्य में आ रहा है। सवाल यह है कि क्या यह AI हमारी मौलिक भावनाओं का स्थान ले सकता है? इसी सवाल को ध्यान में रखते हुए इस शोध पत्र के माध्यम से विभिन्न घटकों पर विचार विमर्श करने की कोशिश की गई है। यहां पर मौलिक भावना की परिभाषा, हिंदी साहित्य का निर्माण और परंपरा, AI का इस्तेमाल में संभावनाएं और समस्या, आलोचनात्मक दृष्टि और भविष्य की दृष्टि से विचार प्रस्तुति करने की कोशिश की है। अंततः सभी मुद्दों पर ध्यान रखते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि यह सहायक तो हो सकता है लेकिन वह हमारे मौलिक भावना का स्थान कभी नहीं ले सकता।

KEYWORDS:

हिंदी साहित्य, AI, तकनीक, मौलिक भावना.

प्रस्तावना:

साहित्य का जन्म मानव की रचनात्मकता से होता है। कविता, उपन्यास, नाटक या निबंध इन सभी का मूल रूप या भाव मनुष्य के विचार या आत्मा से ही आता है। यह मानव की संवेदना और अनुभव से जुड़ा रहता है, लेकिन अब यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता साहित्य के क्षेत्र में भी प्रयुक्त हो रही है, लेकिन यहां सवाल यह है कि क्या AI में मौलिक भावनाएं संभव है? या फिर यह केवल एक यांत्रिकी साधन है जो सिर्फ शब्दों का मिलाव कर सकते हैं?

इसलिए मेरा यह सोचना है कि यह केवल तकनीकी या AI जुड़ा

सवाल नहीं है बल्कि यह मानवीय भावना से जुड़ा विषय है। अगर साहित्य कहां से आता है तो मनुष्य के अंतःकरण से आता है। इसलिए इस शोध पत्र में हर घटक के अंत में यह स्पष्ट करने की कोशिश की है कि AI कितना और मानव कितना साहित्य में अपना योगदान दे सकते हैं। इसी के माध्यम से अंतिम निष्कर्ष सामने आएगा।

1. मौलिक भावना की अवधारणा:

सबसे पहले यह सवाल है - मौलिक भावना कहां से उत्पन्न होती है? और इसका जवाब देखा जाए तो मानव के हृदय में उत्पन्न वास्तविक संवेदना, अनुभव और कल्पना इनके उजागर होने वाली संज्ञा यानी भावना। जब तक साहित्य में लेखक का अपना दृष्टिकोण नहीं हो तब तक वह साहित्य ज्वलंत नहीं लगता। साहित्य में लेखक की जीवनानुभूति और संवेदनात्मक शक्तियां होती है। जैसे कि हम देख सकते हैं– "पूरब के आसमान की गुलाबी पंखुड़ियां बिखरने लगी थी और सुनहले पराग की एक बौछार सुबह के ताजे फलों पर बिछ रही थी।"[i] जिस प्रकार धर्मवीर भारती जी ने यह कुछ विचार प्रस्तुत किए है। इसमें प्रकृति को देखते हुए उनके मन में उमड़ रहे भाव इन्होंने कुछ इस प्रकार रखे है। यह भावनाएं, विचार अनुकरण से नहीं आती इनके लिए मानवीय संवेदनशीलता की जरूरत है। मेरा मानना है कि मौलिक भावना मनुष्य के अनुभव या विचारों से ही जन्म लेती हैं। इन भावनाओं तक यह कभी नहीं पहुंच सकता, यह कोई गणना और डाटा नहीं है यह अनुभव और पीड़ा से आता है।

2. हिंदी साहित्य मानवी भावना और प्रश्नचिह्न:

हिंदी साहित्य ने पहले से ही भावनाओं को केंद्र में रखा है, समाज को रखा है। भक्ति की अनुभूति लेनी हो तो भक्ति काल, श्रृंगार की अनुभूति लेनी हो तो रीतिकाल तथा सामाजिक यथार्थ की अनुभूति लेनी हो तो आधुनिक युग है। पहले से ही भावनाएं साहित्य की आत्मा रही है। ऐसे में जब AI हमारे बीच आता है तो यह सवाल उठ खड़ा रहता है, क्या यह भावना अब कृत्रिम बनेगी? क्या अब मनुष्य की संवेदना इन मशीनों द्वारा लिखे जाएंगे? क्या यह मशीन हमें कबीर के विचार, मीरा की कृष्ण भक्ति या तुलसीदास द्वारा लिखित वह 12 ग्रन्थ जो इनकी खुद की भावना, विचारों के बराबर यह AI खुद के विचार हमारे सम्मुख रख सकते हैं? नहीं, बल्कि AI इस विचारों की परंपरा को आगे बढ़ा सकता है, आने वाली पीढ़ी के लिए आसानी से समझने का माध्यम बन सकता है। इस विषय पर अनेक संस्थान विश्वविद्यालय कार्य कर रहा है जैसे

की 'गुरु गोविंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय दिल्ली' यह विश्वविद्यालय भारतीय प्राचीन ज्ञान प्रणाली को तकनीकी नवाचार के माध्यम से आगे बढ़ाने के लिए केंद्र स्थापित करने जा रहा है यह भारतीय पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक तकनीक के साथ आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण कदम है।[ii] साथ ही CSIR-CIMAP लखनऊ यह संस्थान पारंपरिक औषधि की शुद्धता की पहचान के लिए AI के माध्यम से पारंपरिक चिकित्सा उनकी पद्धति के ज्ञान को आगे कैसे बढ़ाया जाए इस पर कार्यरत है।[iii] इसका उपयोग मानवी भविष्य में जरूर होगा, लेकिन यह एक ज्ञान है, जो मानव द्वारा आगे कैसे बढ़ाए यह सोच रही है।

3. हिंदी साहित्य में AI का प्रवेश – प्रश्न और संभावनाएँ:

AI द्वारा आज हर कोई अपने लेख को सरल बनाने में मदद ले रहा है। AI की सहायता से शोध के बारे में जानकारी इकट्ठा करने में, विषय वस्तु बनाने में तथा तकनीकी और व्याकरण की गलतियां सुधारने के लिए AI का उपयोग होता नजर आ रहा है। AI की सहायता से साहित्य की हर एक बात, हर एक पहलू के बारे में ज्ञान प्राप्त करने में मदद हो रही है। यहां सवाल यह है कि क्या AI खुद साहित्य लिख सकता है? या लिख सकेगा? इस पर मेरा मत है कि यह साहित्य को लिखने में मदद कर सकता है, जानकारी इकट्ठा करने में सहायता प्रदान कर सकता है लेकिन साहित्य की रचना खुद से नहीं कर सकता।

4. मौलिक भावना और AI – सकारात्मक प्रश्न:

सकारात्मक दृष्टि से देखा जाए तो भले ही यह साहित्य खुद से नहीं लिख सकता, वह भावना या विचार नहीं दे सकता लेकिन यह हमें सहायता कर सकता है। इस पर कुछ सवाल: क्या AI लेखकों की मदद कर सकता है? → हाँ। 'एम कैफ' कहते हैं AI लेखकों को व्याकरण, संरचना उद्भव और अनुशासनिक मानकों में उपयुक्त हैं। इसकी सहायता से लेखक के लिए आसानी हो सकती है लेकिन इसका इस्तेमाल विचारपूर्वक और नैतिकता से होना चाहिए।[iv] इस पर मेरा भी मानना यही है। यह सहायक हो सकता है आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में व्यक्त नहीं लेकिन इसका यह अर्थ नहीं की पूरा साहित्य यह हमें दे सके और बस हमारा नाम हो।

क्या यह रचनात्मक प्रक्रिया को तेज़ बना सकता है? → हाँ। 'ए आर दोषी' जी का कहना है कि AI विचारों की उत्पत्ति में सहायता करता है, विशेषता जिनकी रचनात्मकता कम होती है उनकी रचना के वृद्धि के

लिए इसका उपयोग हो सकता है। इन सभी बातों पर गौर किया जाय तो यह समझ आता है कि AI सहायता प्रदान कर सकता है लेकिन भावनाओं की उत्पत्ति नहीं कर सकता।[v]

5. मौलिक भावना और AI – नकारात्मक प्रश्न:

जितना सकारात्मक पक्ष था उतना ही नकारात्मक पक्ष भी महत्वपूर्ण है। क्या AI में व्यक्तिगत पीड़ा, आनंद या करुणा का अनुभव है? → नहीं। अगस्त 2024 में एक लेख प्रकाशित हुआ था यह लेख बताता है कि क्या AI उपकरण "दर्द की मान्यता" और "करुणा-जैसे व्यवहार विकसित कर सकते हैं?" लेकिन यह नहीं बता सकता कि AI वास्तव में दर्द महसूस करता है।[vi]

क्या वह मानव जीवन की जटिल भावनाओं को समझ सकता है? → नहीं। क्योंकि भावनाओं का उद्भव मानवी जीवन के अनुभव से होता है, उसकी पीड़ा, आनंद से जुड़ी होती हैं यह AI खुद से नहीं ला सकता। इन प्रश्नों के उत्तर से स्पष्ट है-AI मौलिक भावना को प्रतिस्थापित नहीं कर सकता।

6. आलोचनात्मक दृष्टिकोण:

सुरेश नरसिम्हा उन्होंने कहा कि AI तकनीकी रूप से अच्छा हो सकता है, लेकिन यह मानव की रचनात्मकता और संवेदनशीलता (sensitivity) या भावनात्मक गहराई नहीं ला सकता।[vii] सुमा प्रियदर्शिनी ने अपने लेख में कहा है कि AI लेखन में पैटर्न पहचान कर सकता है, भाषा और संरचना संभाल सकता है, पर सृजन, मौलिकता, विचारों में नवीनता, भावनात्मक गहराई और मानव मस्तिष्क-मूल अनुभवों को पूरी तरह से सम्मिलित नहीं कर सकता। यह लेख इस बात पर चिंतित है कि AI दिलचस्प तो हो सकता है पर कभी-कभी "मानव के दिल की आवाज़" मिस हो जाती।[viii] आलोचकों का कहना है कि यह AI उत्पन्न साहित्य में केवल शब्दों की श्रृंखला है जिसमें रचना तो है लेकिन आत्मा नहीं है यह कुछ इस प्रकार है कि रोबो वाद्य तो बज रहे हैं लेकिन ताल नहीं आ रहे। इसीलिए AI एक साधन बन सकता है लेकिन आत्मा और विचार हमेशा मानवनिर्मित ही रहेगा।

7. भविष्य की दिशा – प्रश्न से उत्तर तक:

जैसे आज हमारा यह सवाल है, वैसे ही भविष्य में भी यह सवाल रहेगा- क्या हिंदी साहित्य तकनीकी प्रदान हो सकता है, या मानवी

संवेदना प्रदान बना रहेगा? लेकिन अभी जो परिस्थिति उसे देखते हुए, मेरा मत यह है कि दोनों में संतुलन बना रहेगा। लेखक शोध और अभिव्यक्ति माध्यम से AI के सहारे से साहित्य निर्माण करेगा लेकिन भावनाओं का केंद्र हमेशा मानवी हृदय ही होगा। समाधान संतुलन में है। न पूर्ण तकनीकी साहित्य चाहिए, न पूर्ण परंपरागत जड़ता। दोनों का मेल ही हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाएगा।

निष्कर्ष:

"हिंदी साहित्य में AI और मौलिक भावना? आज AI हमारे जीवन में हर जगह घुस गया है। सुबह से शाम पूरे 24 घंटे हम इस तकनीकी दुनिया से घिरे पड़े हैं। यह विषय हमें सोचने पर मजबूर कर देता है कि क्या AI भविष्य में हमारे साहित्य निर्माण की डोर अपनी हाथों में लेगा? आज इस सवाल पर हमारे पास जवाब है, लेकिन आगे भविष्य में फिर यह सवाल उठ खड़े रह सकते हैं। दुनिया तेजी से आगे बढ़ रही है, कल फिर कोई नई बला आ सकती है जो यह स्थान फिर हासिल करने की कोशिश करेगी, लेकिन अंततः यह स्पष्ट है कि यह AI सहायक भूमिका निभा सकता है लेकिन भावनाओं का गठन नहीं कर सकता। साहित्य केवल शब्दों से या कुछ पंक्तियों के संयोग से नहीं बनता, बल्कि यह मानव की आत्मा का वास्तविक रूपांतरण है जो हमें व्यक्त होने में मदद करता है। भले ही AI इसमें संयोग की भूमिका निभाए, लेकिन मौलिक भावना का विकल्प नहीं हो सकता। यह स्थान हमेशा मानव के लिए रिक्त रहेगा।

संदर्भ:

1. धर्मवीर भारती- गुनाहों का देवता, वाणी प्रकाशन ग्रुप, संस्करण 85, 2025, पृ. क्र. 10
2. “New centre to promote Indian knowledge traditions at IP Univ” 24 सितंबर 2025, Times of India, टीम रिपोर्टर
3. “CIMAP researchers develop AI-based solution to detect adulteration in medicinal plants”, 30 अगस्त 2025, Times of India, टीम रिपोर्टर
4. “Using Artificial Intelligence in Academic Writing and Research” (2024) M Khalifa स्रोत ScienceDirect
5. A.R. Doshi, Science Advances, “Generative AI enhances individual creativity but reduces...” (2024)
6. Pain recognition and pain empathy from a human-centered AI perspective, विभिन्न शोधकर्ता (review article), अगस्त 2024
7. “AI cannot match creativity and sensitivity of humans”, सुरेश नरसिम्हा, मङ्गलुरु Lit Fest, जनवरी 2024
8. “THE IMPACT OF ARTIFICIAL INTELLIGENCE ON CREATIVE WRITING: IS IT BENEFICIAL OR DETRIMENTAL DEVELOPMENT?”, Suma Priyadarshini B. K., प्रकाशन: जुलाई 2024, ShodhKosh

Funding:

This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.